ISSN : 2347-7660 (Print) | ISSN : 2454-1818 (Online)

वर्तमान महिला लेखन में दाम्पत्य की नयी अवधारणा

डॉ. मार्तण्ड सिंह,

हिन्दी विभाग

इलाहाबाद डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद

संघटक—पी.जी. कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

वर्तमान युग में नारी सुशिक्षित, आर्थिक ढंग से आत्मनिर्भर और पूर्णतः जागरूक हो गई हैं। वह पारम्परिक सामाजिक मानदंडों का लबादा उतार चुकी है और अब वह पारम्परिक पट्टी पर दौड़ने को तैयार नहीं है। स्त्री वर्तमान समाज और समय के साथ अपने सम और विषम सम्बन्धों को समझने की पूरी कोशिश कर रही है। पुराने मूल्यों और मर्यादाओं को झिटक कर उससे अलग हो जाना चाहती है क्योंकि इन्हीं मिथकों की प्रतिठा में स्त्री की न जाने कितनी पीढ़ियाँ होम हुई हैं। अपनी छवि के इस बने बाये चौखटे तोड़कर बाहर निकलने की छटपटाहट युगों से उसके अन्दर चली आ रही है।

इस संदर्भ में प्रख्यात लेख्किा 'ममता कालिया' जी का कहना है कि-

''घर का पुरुष भले ही काउच का कद्दू बना रहे, स्त्री अपनी सम्पूर्ण शक्ति और सामर्थ्य गृह संचालन में लगा देती है। बीच में नौकरी भी कर लेती है। जरूरी मीटिंग, फोन, औपचारिक-अनौपचारिक मुलाकातें उसकी दिनचर्या के अंग हैं। हर मोर्चे पर वह गनर की भाँति तैयार रहती है। रात दस बजे के बाद जब पति उसे मौन मनुहार से देखता है, तभी उसे अपना स्त्री होना याद आता है।''

स्त्री और पुरुष के सम्बन्धों पर विचार करते हुए लेख्किा चन्द्रकान्ता जी कहती हैं-

''भारतीय समाज में स्त्री को दोयम दर्जा दिया गया है। नारीवाद पारम्परिक ज्ञान और दर्शन को चुनौती देता है। ये सारे विचार पुरुष केन्द्रित सोच तक ही सीमित है।''

वह पुरुष सत्ता है जो इतरलिंगी व्यवस्था पर उसकी ताकत को आरोपित करती है। इसी व्यवस्था के माध्यम से पुरुष अपना शारीरिक, आर्थिक और भावनात्मक वर्चस्व स्त्री परलागू करता है। पितृसत्ता ने समलैंगिकता को स्त्री के लिये असंभव माना, क्योंकि उसने अपने इतरलिंगी जीवन के अनुभव को स्त्री पर आरोपित किया। सत्ता के प्रसंग में स्त्री की इच्छा या अनिच्छा का सवाल ही नहीं उठता।

हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री पुरुष के सम्बधों पर गहनता के साथ विचार हुआ है। दाम्पत्य सम्बन्धों की विडम्बनाओं पर प्रख्यात लेख्किा मृदुला गर्ग अपने उपन्यास 'कठगुलाब' में सार्थक विवेचन किया है। विभिन्नवर्ग की स्त्रियों के अंतरंग में संध लगाती हुई इस निष्कर्ष पर पहुँची है कि

''यदि पुरुष मानसिकता की शोषक नीतियों पर लगाम नहीं लगाई गई तो हो सकता है कि इसके विरोध में एक दिन स्त्री संतानोत्पति से ही इन्कार कर दे। पुरुष की हिंसक वृत्तियाँ स्त्री की देह के छीलन के साथ उसके मन में तरल श्रोत कोसुखा बंजर बना दें।''

'कठगुलाब' की स्त्रियाँ सहन शक्ति की सीमाएँ पार करके 'विद्रोह स्तर ही नहीं बुलन्द करती बल्कि स्त्री को समाज धरातल पर लाने का स्वप्न भी देखती है।' उसमें स्त्री की अस्मिता से जुड़ी निजी समस्या है सेक्स और सन्तानोपत्ति है। इस मृदुला गर्ग

ने वैज्ञानिक धरातल पर व्यापक परिप्रेक्ष्य में उठाया है। कृत्रिम गर्भाधान से लेकर किराए पर कोख लेने तक के बौद्धिक विमर्श में यह उपन्यास बहस का मुद्दा बन गया है। इसमें सबसे ज्यादा आकर्षित करने वाली समस्या है-पुरुष और स्त्री का लगभग मशीनी हो जाना जिसका परिणाम है दाम्पत्य सम्बन्धों में तनाव या तलाक का होना। ममता कालिया के उपन्यास 'एक पत्नी के नाट्स' में पति-पत्नी के दाम्पत्य सम्बन्धों का पुनर्परीक्षण करती हुई महत्वपूर्ण प्रश्न उठाती हैं। 'क्या पति पत्नी का सम्बन्ध मात्र सेक्स पर आधारित है? देह का आकर्षण समाप्त होते ही क्या विवाह से प्रेम गायब हो जाएगा? पुरुष की सौन्दर्य लिप्सा को सन्तुष्ट करने के लिए स्त्री की सजावट करने, और पति को रिझाने दुलराने में ही अपनी सम्पूर्ण शक्ति और मेधा का हवन रहेगी? ताकि उसका पति सुन्दर स्त्री के पीछे भागना छोड़ दें। क्या आपसी समझ और आत्मियता दाम्पत्य का आधार नहीं हो सकते?

वर्तमान युग में अब स्त्री पुरुष की 'सेक्सुअल-स्लेब' या पैसिव पार्टनर बनकर रहने को कदापित तैयार नहीं है, वह जीवन साथी बनकर बराबरी का दर्जा चाहती है। जहाँ पति-पत्नी सामंजस्य स्थापित नहीं हो पाता वहाँ तनाव की स्थिति पैदा हो जाती है। मन्नू भंडारी, कल्पना शर्मा से दाम्पत्य सम्बन्धों के संदर्भ में बातचीत करते हुए कहती हैं-''सामाजिक परिवर्तन का केन्द्र है परिवार और परिवार के केन्द्र में है स्त्री पुरुष सम्बन्ध यह जो बदलाव आया है वह-'यह स्त्री की मानसिकता के कारण आया है। स्त्रियाँ आज सम्बन्ध विच्छेद कर रही है। जैसे मेरे उपन्यास आपका बंटी में पति अजय और पत्नी शकुन।'' आपका बंटी उपन्यास में प्रति कोलकाता में अधिकारी है और पत्नी शकुन कालेज में प्रिंसिपल है। शकुन सुशिक्षिता एवं प्रबुद्ध है जिसमें अहं है। वह अपने पद के वर्चस्व एवं बौद्धि कता के घमंड से चूर है। अजय भी अहंवादी है तथा पति पत्नी में कोई झुकाव नहीं चाहता है जिसकी परिणति उनके दाम्पत्य सम्बन्धों में अवच्छेद के रूप में होती है। इस टूटे हुये दाम्पत्य सम्बन्ध का प्रभाव मासूम बंटी के ऊपर पड़ता है जिसको निर्दोष होते हुए भी अनेक यातनाओं से गुजरना पड़ता है।

दाम्पत्य सम्बन्धों की जटिलता एवं स्त्री की उलझी हुई स्थिति एवं तनाव को 'सिम्मी हर्शिता' अपने उपन्यास 'रंगशाला बेवफा' के माध्यम से व्यक्त करती है। पत्नी अब पति की हर खता को माफ करने को तैयार नहीं है। वह पति को अपनी जगह पर बैठाकर सीधा प्रश्न करती है-''यदि मैं किसी दूसरे पुरुष से सम्बन्ध रखूँ तो क्या तुम मुझे माफ कर देते?'' प्रकारातर से अब पुरुष के समक्ष चुनौती यह है कि घर बचाना है तो खुद को भी बदलो क्योंकि सम्बन्धों के बरकरार रखने की जिम्मेदारी अब केवल स्त्री की ही नहीं है। इसी प्रकार 'चन्द्रकान्ता' के उपन्यास 'अर्थान्तर' की नायिका पुरुष की हर खता माफ करने के बजाय समान धराताल पर जीने की आग्रही है। उसे वस्तु की तरह इस्तेमाल होना मंजूर नहीं है इस ्रपकार आज की परिवर्तित हो रही सामाजिक परिस्थितियों में यदि पति अपनी पुरुषवादी अहं्रस्त मानसिकता का परित्याग कर सम्बन्धों में तालमेल नहीं बिठाता है तो सम्बन्ध विच्छेद की भयावह स्थिति पैदा हो सकती है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पति-पत्नी में तनाव उत्पन्न होते जा रहे हैं। पुरुष कहीं सहानुभूति करता नजर आता है, तो कहीं स्त्री जगत् पर अत्याचार। प्राय: दोनों में साम्य नहीं आ पाता। दोनों में वैचारिक मतभेद दिखाई देता है। पति-पत्नी में ताल-मेल का अभाव दिखाई पड़ता है। वस्तुतरू स्त्री-पुरुष सृष्टि के रहस्य हैं। दोनों की उपादेयता है, फिर भी दोनों में द्वन्द्व है-यही पति-पत्नी सम्बन्धों की जटिलता का मूल कारण है।

डॉ. वेद प्रकाश अमिताभ ने 'हिन्दी कहानी में सौ वर्ष' नामक अपनी पुस्तक में पति-पत्नी सम्बन्धों की जटिलता की मीमांसा करते हुए लिखते हैं-

''हिन्दी कहानियों में ऐसे पति-पत्नियों के अनेक उदाहरण मिलेंगे, जहाँ एक दूसरे से 'एडजस्ट'

न कर पाने की स्थिति में वे एक दूसरे से अलग होना बेहतर समझते हैं। ....ऊँचाई (मन्नू भंडारी), ठेका (विष्णु प्रभाकर), त्रिकोण (कृष्ण बलदेव वेद) और निश्चय (कुलभूषण) आदि कहानियों में पर-पुरुष के साथ यौन-सम्बन्ध चाहे वह शादी से पूर्व हो या शादी के बाद को अत्यन्त सहजता से लिखा गया है। 'त्रिकोण' में पत्नी को पर-पुरुष के साथ एकान्त में देखकर पति की उदासीन प्रतिक्रिया से एक नवीन धारणा की संभावना बनती है।''

पति-पत्नी के सम्बन्धों की जटिलता का प्रâायड के अनुसार मूल कारण असाधारण आचरण काक थन है कि कई पत्नियाँ ऐसी भी होती हैं, जो यौन-अतृप्ति के कारण असाधारण आचरण करने लगती हैं। उनमें कुण्ठा, निराशा और चिड़चिड़ाहट आ जाती है। तब नैतिकता-अनैतिकता का प्रश्न उनके सामने नहीं ठहर पाता। यह यौन-अतृप्ति कभी तो पति के नपुसंक होने की स्थिति के कारण अनुभव होती है और कभी पति के शारीरिक रूप से स्वस्थ न होने के कारण। 'मित्रो: मरजानी उपन्यास में कृष्ण सोबती न े पति द्वारा असन्तुष्ट नारी का चित्र अंकित किया है।

पति-पत्नी की अभिरूचियों और आदमी की भिन्नता भी उनके सम्बन्धों में जटिलता उत्पन्न करने लगती है। यदि दोनों अलग-अलग वर्गों से सम्बन्धित हैं, तो अभिरूचियों एवं आदतों की टकराहट और तीखी होती है। निर्मला ठाकुर की कहानी 'अंकुर' की सुमिता की सारी पीड़ा एवं घुटन मात्र इसलिए है कि वह अपने पति की दृष्टि में उन लोगों में से है, जिनका मानसिक-स्तर अभिजात वर्ग के मानसिक स्तर से नीचे, जिनका कोई 'टेस्ट' नहीं है। प्रशान्त जानता है कि उसके 'टेस्ट' को घर का नौकर 'किसन' जान सकता है, किन्तु पत्नी अपने मध्य-वर्गीय संस्कारों के कारण उस स्तर तक पहुँच ही नहीं सकती। फलस्वरूप, समूचे लगाव के होते हुए भी पति-पत्नी किसी बिन्दु पर एक दूसरे से कटे-कटे रहते हैं। सुमिता समझती है कि-

''वह इस घर में मेहमान की हैसियत से रहती है। मेहमान की हैसियत से भी नहीं ....उसे यहाँ कोई जबरदस्ती छोड़ गया है।''

ऐसी दशा में कुछ लोग होने तथा पलायन करने की बात सोचने लगते हैं।

पारस्परिक विश्वास की कमी भी पति-पत्नी सम्बन्धों में जटिलता या अन्तर ला देती है। ममता अग्रवाल की कहानी 'स्वामिनी' में सुप्रिया की पीड़ा का कारण कोई घटना, वस्तु या व्यक्ति न होकर एक अजीब सा 'अहसास' है। उसे लगता है कि आनन्द की पहली पत्नी मर कर भी जीवित है। घर पर एकछत्र शासन कर रही है और वह द्वितीय स्वामिनी का रोल निभाने के लिए विवश है। पति-पत्नी के मध्य जैसे सदैव कोई अन्य मौजूद रहता है।

सुरेश सिन्हा की कहानी 'तट से छुटे हुए' के परमात्मा बाबू तथा भगवती का दर्द अन्य प्रकार का है। जिन्दगी की आखिरी दौर से गुजरते हुए वृद्ध दम्पति की पुरुष की अपनेक्षा ने भीतर ही भीतर खोखला कर दिया है। पुत्र से निराश परमात्मा बाबू बत्तीस वर्षों के रिश्ते के प्रति भी शंकालु हैं। एक ही घर में रहते हुए पति-पत्नी ऐसे लगते हैं, जैसे एक बड़ी सराय में दो अजनबी टिके हुए हैं।

पारिवारिक घुटन के कारण भी दाम्पत्य-प्रेम सम्बन्धों में वैमनस्य एवं कटुता आ जाती है। पारिवारिक-घुटन के दृश्य हमें 'कृष्णा सोबती' के उपन्यास 'मित्रों मरजानी' में दृष्टिगोचर होते हैं-

जहाँ नायिका मित्रो पति के संसर्ग से अप्रसन्न बनी रहती है। साथ ही वह उस ओर प्रेरित हो देह-तृप्ति के निमित्त साधन भी चाहती है। इस कारण उसका व्यवहार असंयत जान पड़ता है। परिवार में भी उसकी जेठानी आदि उसके व्यवहार से क्षुब्ध हैं। इससे भी विचित्र स्थिति उत्पन्न हो जाती है। उसका परिवार घुटन की स्थिति में आ जाता है, किन्तु यह पारिवारिक स्थिति का कारण है पुरुष की नपुंसकता।''

''आपका बंटी'' उपन्यास में मन्नू भंडारी ने एक ऐसे परिवार का उल्लेख किया है, जहाँ पति-पत्नी के मध्य हुए तनावों का दुष्परिणाम बच्चों को भोगना पड़ता है। उपन्यास का बालक बंटी न तो पिता को समझ पाता है और न ही अपनी माँ को, परिणामत: उसकी स्थिति विचित्र हो जाती है। पाठक को लगता है कि दस वर्षीय बालक बंटी अपनी उम्र से कई गुना बढ़ा हुआ है।''

उपर्युक्त कथन इस बात का सूचक है कि शहरी जीवन में व्यस्त पति-पत्नी अपनी संतान की ओर दृष्टिगत नहीं हो पाते हैं। साथ ही पारिवारिक विसंगतियां उनमें तनाव का कारण बनती है।

'पुराने नाले पर नया फ्लैट' कहानी का शीर्षक ही नए और पुराने के द्वन्द्व की गवाही देता है। पत्नी पुराने संस्कारों से युक्त है और पति आधुनिक संस्कारों में रंगा हुआ है। पति के लिए किसी अन्य नारी से दोस्ती होना कोई अनुचित बात नहीं है। उसे पत्र श्लिखने वाली दीप्ति उसके कंधों पर हाथ रख कर 'काफी' पीने का आग्रह भी कर सकती है। पत्नी बीरू के लिए यह सब अकल्पनीय है। वह किसी पुरुष से पति-पत्नी के काम-सम्बन्ध के अलावा 'प्रेमी-प्रेमी' के रिश्ते की बात या कल्पना तक नहीं कर सकती। परिणामत: जैसे एक धुन उसे हमेशा खाया करती है। पति 'पूर्णरूपेण' आधुनिक' नहीं है, 'अर्ध-आधुनिक' है नहीं तो उसे अपनी प्रेयसी दीप्ति के पत्र को छिपाने की आवश्यकता न पड़ती। फिर भी उसके 'स्टैण्ड' में आधुनिकता का संस्पर्श है।

चूँकि तुम मेरी पत्नी बन आई हो, इसलिए अपने सारे पहले के मित्रों, परिचय वालों या आत्मीय बन्धुओं से सम्बन्ध तोड़ दूँ, अन्यथा यह धोखा होगा, यह बात बीरू मेरी समझ में न तब आई थी और न अब आती हैं''

यह पुरुष का 'स्टैण्ड' या 'अहं' है। श्री राजेन्द्र यादव की यह कहानी पति-पत्नी सम्बन्धों के परिप्रेक्ष्य में जटिलता की ओर संकेत करती है।

राजेन्द्र यादव की कहानी 'छोटे-छोटे ताजमहल' में देव, राका (पति-पत्नी) जब विवाह की छठी-वर्षगांठ पर पारस्परिक तनाव के कारण सम्बन्ध-विच्छेद करते हैं तो विजय की ही नहीं, किसी को भी आश्चर्य में डालने वाला है। यहाँ पति-पत्नी के जन्म-जन्मान्तर के पक्के रिश्तों की भावुकता तो आहत होती ही है, जहाँ 'हनीमून' शुरू हुआ था, वहीं विच्छेद के प्रारम्भ का निर्णय खासा बौद्धिक है। पति-पत्नी के बीच का तनाव उस सीमा तक पहुँच गया है, जहाँ से सम्बन्ध-हीनता की दौड़ शुरू होती हैं। इस इस स्थिति में अलग हो जाना बु०िमत्ता पूर्ण निर्णय है। कहानीकार कहता है-

''दोनों तरफ से सहन की शायद हद हो गई...नसों का यह तनाव मुझे या उसे पागल बना दे या कोई ऐसी-वैसी बेहुदगी करने पर मजबूर करे, इससे तो अच्छा है कि दोनों अलग ही रहें। चाहे तो किसी के साथ 'सेटिल' हो जाये।''२० राजेन्द्र यादव जी पति-पत्नी के प्रेम-संदर्भ में तनाव की स्थिति में परिवर्तन को अनिवार्य मानते हैं। यह दृटिकोण बुद्धिसंगत भी लगता है।

मन्नू भण्डारी की 'स्त्री-सुबोधिनी' और 'यही सच है' में प्रेम-द्वन्द्व की परिणति निर्णयात्मक है। 'विवाहित पुरुषों से ठगी गई एक कामकाजी युवती के कटु अनुभव कुछ इस प्रकार हैं कि वह समानधर्मा युवतियों को अपनी दशा से कुछ 'सीख' देना चाहती हैं। उसका अनुभव है कि विवाहित पुरुष के लिए प्रेम बैठाने की विलासिता है। वह युवती को सुन्दर शब्द-ताल में फंसाकर अपनी शरीर और भावनाएँ उसके जिम्मे कर देता है। तथा सारी झंझट पत्नी के नाम। वह प्रेमिका को बार-बार समझाता है कि बीबी बनते ही औरत बहुत उबाऊ एवं त्रासक बन जाती है। इस तरह यौन-शोषण का क्रम कुछ अरसे तक चलता रहता है। भोली-भाली किशोरियों को 'सीख' देता है कि भूल कर भी विवाहित व्यक्ति से प्रेम में नहीं पड़ना चाहिए। अधिकांशतरू पुरुष दो नावों पर पैर रखने वाले 'शूरबीर' की भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार पुरुषों के

नाटकीय प्रेम को उजागर कर, लेख्कि उनका पर्दाफाश करती है।

मन्नू भंडारी की दूसरी कहानी 'यही सच है'' में प्रेम के उस 'मिथ' को तोड़ा गया है, जिसमें प्रेमी दूर-दूर रहकर आहें भरता है, कुर्बानी देता है देह समीप्य भी देता है- किन्तु यह कोई माने नहीं रखता। यद्यपि भावुकता के कमजोर क्षणों में इस तरह का लगाव भी 'सच' लगता है। उदाहरण-स्वरूप जब निशीथ ने 'दीपा' को विदा देते समय हाथों से उसे जरा सा स्पर्श करके छोड़ दिया था, तब उसने सोचा कि लगाव की जिस अभिव्यक्ति की वह प्रतीक्षा कर रही थी, वह एक तरह से हो ही गया। वह कहती है-

''मैं सब समझ गयी, निशीथ, सब समझ गई। जो तुम इन चार दिनों में नहीं कर पाये, अब तुम्हारे इस क्षणिक स्पर्श ने कर दिया।'' किन्तु कोरी भावुकता आज के जीवन का यथार्थ नहीं हो सकती। इसीलिए प्रेमी संजय के समीप होते ही भावधारा बदल जाती है और वह अनुभव करती है कि परिरम्भ एवं चुम्बन से प्रणय की अभिव्यक्ति की सच है कहानी का यथार्थ यही सच है निर्णयात्मक सच तक पहुँचने में पहले दीपा ही द्वन्द्व तक पहुँचती है। यह द्वन्द्वशीलता भारतीय नारी के मूल्य-संक्रमण के समूचे परिदृश्य की परिचायक है। ''यही सच है''-कहानी में ऐसा लगता है कि दीपा के लिए 'निशीथ' और संजय दोनों एक साथ मिलकर ही वह 'पुरुष' बनता है, जो उसे चाहिए। उसके लिए 'संजय' वâुछ ज्यादा है तथा 'निशीथ' कुछ कम।

दिनेश पालीवाल की 'पुल' कहानी में पति-पत्नी में न केवल विक्षोभ रख देता है। परस्पर विरोधी अभिरूचियों और विचारों का संघर्ष पति-पत्नी को किसी सीमा तक एक दूसरे के प्रति आक्रामक और क्रूर बना देता है निर्मला के रूप में 'पत्नी' को जो 'मेज' गढ़ी गई है, वह संस्तुत्य है। वह (निर्मला) खुद अपने भविष्य का निर्माण करती है अपने पति को 'पर-नारी-सम्बन्ध के समानान्तर वह एन.सी.सी. के अफसर के साथ यौन-सम्बन्ध स्थापित करके पुरातन मूल्यों एवं नैतिक वर्जनाओं को खुली चुनौती देती है। पति के परम्परागत निरंकुश अधिकार को व्यावहारिक धरातल पर नकारा गया है।

भारतीय नारी जिस पति को परमेश्वर की तरह पूज्य मानती है, जब वह पुरुष उसे पूरी आस्था एवं स्नेह नहीं देता, तब वह पुरुष उसका बड़ा शत्रु बन जाता है। उसके प्रति नारी के हृदय में 'प्रतिशोध' का ज्वर उठता है। नारी का अहं आहत होता है, तो वह नागिन एवं सिंहिनी सी बन जाती है। 'आपका बंटी' की लेखिका मन्नू भंडारी ने शकुन (पत्नी) के आत्म-चिन्तन के माध्यम से व्यक्त करते हुए लिखा है-

''नहीं, अजय से कुछ पा सकने का दंश यह नहीं है, बल्कि दंश शायद इस बात का है कि किसी और ने अजय से यह सब कुछ क्यों पाया, जो उसका प्राप्य था।''

कोमल भावनाओं के सहारे जीने वाली नारी के भीतर जब प्रतिशोध की ज्वाला धधकती हे, तब वह चंडी रूप धारण कर लेती है। प्रेम अंधा होता है किन्तु उससे भी अधिक अंधी एवं घातक प्रतिशोध की ज्वाला होती है। मन्नू भंडारी के 'आपका बंटी' उपन्यास में शकुन (पत्नी) के माध्यम से लेख्कि ने एतद्सम्बन्धी विचार व्यक्त किए हैं-

'वह (शकुन) जानती है कि अजय बंटी को बहुत प्यार करता है, पर वह बंटी को मिलने भी नहीं देगी। बंटी से न मिल पाने की वजह से अजय को जो यातना होगी, उसकी कल्पना मात्र से उसे सन्तोष मिलने लगा।''

सच तो यह है कि प्रेम-सम्बन्ध में गांठ नहीं होनी चाहिए। गांठ से प्रेम विकृत हो जाता है। इसमें पग-पग पर विषपान करना पड़ता है। स्त्री तथा पुरुष के मध्य यौन-वासना की परितृप्ति अनिवार्य है।

वस्तुतः प्रेम मेंदेह एवं मन का सन्तुलित सामंजस्य अनिवार्य है प्रेम में संचयित जीवन आवश्यक है। सामाजिक विषमाएँ, अभिरूचियों की विभिन्नता, शैक्षिक स्तर की समानता, यौन-वासना की

अतृप्ति एवं पारस्परिक विश्वासों की कमी, एवं पारिवारिक-विसंगतियाँ आदि पति-पत्नी का 'अहं' भी दाम्पत्य-जीवन की सुखद शृंखला को तोड़ देता है। पति-पत्नी को अनेक विसंगतियों में भी आपस में 'ताल-मेल' स्थापित रा ा नितान्त अनिवार्य है। पारस्परिक 'तालमेल अथवा 'एडजस्टमेन्ट दाम्पत्य जीवन में वांछनीय है।

उषा, प्रियंवदा- दो अंधेरे- उषा प्रियंवदा की इस चर्चित कहानी में विवाहेत्तर प्रेम के कारण दाम्पत्य सम्बन्धों में दरार आ जाती है। इसकी प्रधान पात्र कौशल्या अपने पति के साथ अभाव ग्रस्त स्थिति में भी सुखी रहती है- ''कौशल्या ने चाँद पा लिया था।'' वह सोचती है कि दाम्पत्य जीवन स्वर्ग का एक कोना है, क्योंकि वहाँ उसका पति है जो बिल्कुल उसका अपना है। परन्तु एक दिन वह दु:खी हो गई उसने देख लिया कि उसका प्रति दिनेश अपनी आलमारी से एक नीली और लाल छपी हुई साड़ी निकालकर छिपाकर पड़ोस की 'कवल' को दे रहा है, इस घटना ने उसे दुरूखी कर दिया। उसने पहली बार यह महसूस किया कि 'वह पति दिनेश के लिए सहज प्राप्य नारी शरीर है और कुछ भी नहीं।' इससे पति पत्नी के अनत: सम्बन्धों में दरार आ जाती है। इस प्रकार एक तीसरा व्यक्ति पति-पत्नी के मध्य दरार का कारण बनता है।

मेहरून्निसा परवेज की कहानी 'चमड़े का खेल' इसमें शुभा की शादी देव से हुई है शुभा और देव माँ से मिलने आते हैं, पर बाबूजी नहीं मिल पाते हैं। माँ बेटी के लिए तड़प उठती है और बेटी से कहती है 'तेरा मायका मेरे आज तक ही है फिर तू अपनी गृहस्थी में रम जाना। बस छोटा भाई भर है कभी आए तो सिर पर हाथ रख देना। तू चिन्ता मत कर मैं अपनी चमड़ी के भी कपड़े बनवाकर अपने बच्चे को पहना सकती हूँ। सारी जिम्मेदारियाँ खत्म होने के बाद जब पुरुष किसी अन्य स्त्री से जुड़ जाता है, तब पत्नी का अन्त: सम्बन्ध उघड़ आता है।

सन्दर्भ-सूची

1. मनुस्मृति
2. वही
3. रामचरितमानस:अरण्यकाण्ड, पृ. ४३५
4. हंस (जनवरी-फरवरी, २०००), पृ. ४२
5. चाक: राजकमल प्रकाशन, पृ. ३३८
6. ललमानिया (किताबघर) पृ. ६१
7. वही, पृ.६१
8. प्रतिदिन (ममता कालिया), पृ.१०३
9. घटना चक्र, सुमति अयर, पृ. १३
10. हिन्दी अनुशीलन: जून, २००४, पृ.६
11. वही, पृ. ६
12. कठगुलाब: भारतीय ज्ञानपीठ, पृ.
13. आजकल : मार्च, २००८, पृ. १५
14. वही, पृ. १९
15. हिन्दी कहानी के सौ वर्श-डॉ. वेदप्रकाश, पृ. १०५
16. अंकुर निर्मला ठाकुर (नयी कहानियाँ), पृ. ५०
17. मित्रो मरजानी, पृ.
18. आपका बंटी, पृ. ११४
19. पुराने नाले पर नया फ्लैट, पृ. १६
20. छोटे-छोटे ताजमहल, पृ. २३
21. स्त्री सुबोधिनी (मन्नू भंडारी), पृ. ८७
22. यही सच है और अन्य कहानियाँ, पृ. ८६
23. आपका बंटी, पृ. ३९
24. वही, पृ. ४६
25. जिन्दगी और गुलाब के फूल: ऊषा प्रियंवदा, पृ.८९

26. वही, पृ. ९१

27. आदमी और हव्वा: मेहरून्निसा परवेज, पृ. ५७

Copyright © 2017, Dr Martand Singh. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.